421(1)
H (85)

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1334/10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 421

K
7811

Asli Gurgaon ki Alha, Part III.
by Niadhar Singh.
Govt. of U.P.
1 copy

ॐ

असली

गुड़गांवां की आल्हा

तीसरा भाग

NATIONAL ARCHIVES
LIBRARY
No. 1
Date 23.8.48
GOVT. OF INDIA.

लेखक—नियादरसिंह "बेचैन" देहलवी

प्रकाशक:—बेचैन पुस्तकालय,
बाजार सीताराम, देहली। (मू० [illegible])

891.43
DC379G

गुड़गांवां की लड़ाई

तीसरा भाग

जङ्ग रियासत अलवर

प्रथम सुमरूँ गौरी सुत को शिवशंकर का ध्यान लगाय।
सुमर भवानी गुड़गांवे की सारा हाल कहूं समझाय॥
जैसे झगड़ा हुआ अलवर में पन्चो सुनो लगाकर ध्यान।
भूकी माता गुड़गांवे को बिन खप्पर भरे न कल्यान॥
खप्पर भरे बिना नहीं माने इसमें झूट जरा है नाय।
जैसा सम्वत अबके आया ऐसा पहले आया नाय॥
कुछ दुनियां भूकी मर जावे कुछ लड़ लड़ करके मरजाय।
भाई भाई आपस में जूझे हम दर्दी का ख्याल भुलाय॥
वहां की बातें यहां छोड़कर पन्चो कहूं खुलाशा हाल
हुई लड़ाई जो अलवर में उसका मुझको बहुत मलाल॥
गांव गांव लूटे अलवर के लूट लिये जाटों के लाल।
आग लगा बच्चोंको फूंका स्त्रियोंका नहींकीना ख्याल॥
अपने धर्म से गिरे मुसलमां जिन को मेव कहे संसार।
अलवर में हिन्दू लूटे यहां भी लूट करो तकरार॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 421
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

वरना निकल आओ सब यहाँ से माल असबाब लेओ संग लाय
इतनी सुन कर मेव चल पड़े तहसील फिरोजपुर पहुंचे आय
धावा कीना धार तिजारे संग में फौजी लिया जुवान ।
गन मशीन थी पास जिन्हों के लड़ने का सारा सामान ॥
रात रात में गांव फूंक दिया लूट लिया लाखों का माल ।
कत्ल बहुत से लोग कर दिये सबको कर दिना पामाल ॥
चौतरफा तोप लगादी एन्हो जिनपर फौजी खड़े जुवान ।
रास्ते सारे बन्द कर दिने भारी हुआ घोर घमासान ॥
मन माना धन सबने लूटा बालक बूढ़े दिये पजार ।
वस्तर जेवर लूट लूट कर इज्जत लई त्रियों की तार ॥
सारी बस्ती लूट उन्होंने सारा लूट लिया बाजार ।
घर में बड़ बनियों को लूटा सब के लिने शीश उखार ॥
तार गया जब है अलवर को लक्खू सिंह ने बांचा आय ।
सँग में लेकर शूर सिपाही कुछ अरसे में पहुंचा आय ॥
दुर्गा भवानी अब जंगल में धुन्धू कार दिया मचवाय ।
अपना गैर न दीखे भाले सब को मार ही मार सुहाय ॥
एक सँग छोरे वीर जाट के एक सँग मेव खड़े बलवान ।
अल्ला अल्ला मेव कर रहे हिन्दू सुमर रहे भगवान ॥
हर हर महादेव का नारा जाट के छोरे रहे लगाय ।
कोई जै बोले गांधीजी की कोई अल्ला अकबर चिल्लाय ॥

जीन पकड़कर चढ़ा घोड़ेपर पाँचों कर में उठा हथियार।
ऐड़ दीनी घोड़े में सूरज बन्सी राज कुमार।
मेव लूट मचा रहे जिस जो कोई घड़ी में पहुँचा जाय।
जो न लोग थे गये सभा में वोही सामने पड़े दिखाय॥
कल्लू खां को देख अगाड़ी नैनों गई लाली छाय।
धर ललकार दई जोधा ने पाजी सुन ले कान लगाय॥
तू तो कहवे था बंगले में हमारा बिलकुल नहीं कसूर।
आवो पाजी जरा मुकाबिल तूने ही कीना यहां फतूर॥
इतनी कहकर कीना हमला कल्लू का दिया शीश उड़ाय।
ऐसी मार दई इकले ने ल्हास पे दिनी ल्हास बिछाय॥
भगदी पड़ गई है मेवों में छोड़ छोड़ भागे हथियार।
करता हाथ पटे बाजी के बांका वीर मर्द सरदार॥
पड़ी न हिम्मत किसी मेव की वृजूसिंह से आंख मिलाय
बहुत से मार दिये इकले ने बहुत से भागे जान बचाय॥
देखी दशा फिर गांवकी जाकर आगमें बच्चे रहे चिल्लाय।
नंगी त्रियें पड़ी देख कर आंसू गिरे नैन से जाय॥
जब न देखा गया नजारा अपना घोड़ा दिया फिराय।
जहां पर बस्ती थी मेवों की इकला वहां पर पहुंचा जाय॥
जर कर गरजा वीर बहादूर सबसे ऐसे कहा सुनाय।
जो रहना तो रहो राजी से लड़ना चहो मुकाबिल आय॥

दई दुहाई जा बंगले में हाथ जोड़ कर कहा सुनाय ।
हम सब मरगये बिन आई मैं अपना सब कुछ दिया बसाय ॥
बालक बच्चे भूखे मर रहे मेवों ने दिये गांव पजार ।
वे खटके दिन धौले लूटा त्रियों की ली लाज उतार ॥
वृजू सिंह वे खबर सोरहे उनके भनक कान पड़ी जाय ।
बंगले बाहर भीड़ देखकर एक दम गये सनाका खाय ॥
सारा हाल जब सुना कानों से नैना होगये लाल अंगार ।
धरकर गरजा वीर बहादुर सूरज बन्सी राज कुमार ॥
जवानो जवानो को ललकारा अब क्यों राखी देर लगाय ।
ये नहीं माने समझाने से इनका बुरा वक्त गया आय ॥
सजो सूरमा सब एक दम से अपने बांध बांध हथियार ।
इतनी सुनकर अफसर बोले हाथ जोड़कर कहा पुकार ॥
हुई बगावत फौज के अन्दर मुस्लिम भागे छुरा समान ।
मेम जीन सब यहां से लेगये सबकुछ कर दीना वीरान ॥
हम आते थे खबर करनको उन्होंने हमें आन लिया नाय ।
बहुत बहादुर कीने जख्मी बहुतों के दिये शीश उड़ाय ॥
जो थोड़े से बचे सूरमा सब मरने को हैं तैयार ।
सबने कपड़े पहन रखे हैं अपने बांध रखे हथियार ॥
इतनी सुन करके ज्वानों से कीनी पलकी नहीं अबार ।
पहन के कपड़े रँग बिरंगे सर पर साफा धरा संभार ॥

कभी लड़ाई करी न हमने रहे सदा से तावेदार ।
जब से बलवा हुआ अलवर में सारा चला गया करार ॥
इस पर जवाब दिया बृजूसिंह रहो प्यार से इसी में खैर ।
जिसने झगड़ा यहां उठाया वो नहीं बचे बचाया फेर ॥
समझाने का काम था जोकुछ हमने तुमको दिया समझाय ।
फिर मत देना हमें बुराई सुनो बृजु गा ध्यान लगाय ॥
इतनी सुनकर सारे चल पड़े किसी ने दीना नहीं जवाब ।
यहां की बाते यहां छोड़ कर आगे सुनना जरा जनाब ॥
जो नौकर थे मेव फौज में भेज जीन ले आये चुराय ।
इकट्ठे होकर सब ज्वानों ने रात को हमला बोला जाय ॥
बहुत से मार दिये सोते ही बहुत से जख्मी दिये बनाय ।
भगी पड़ गई है हिंदुओं में हा हाकार दई मचवाय ॥
दई दुहाई दरवाजे पर रानी जी से कहा सुनाय ।
हमें बरबाद किया मेवोंने जिन्दे ही आग में दिये जलाय ॥
औरत वानी तक ले भागे बालक बच्चे दीने मार ।
लूट लिया धन्य धान्य हमारा ढोर डंगर सारे सरकार ॥
इतनी सुनकर रानी बोली अपने नैनों नीर बहाय ।
तुम सब जाओ बृजू सिंह पर सारा हाल कहो समझाय ॥
वोही मालिक है अलवर के इन्हीं से जाय करो अरदास ।
इतनी सुनकर परजा चल पड़ी पहुंची बृजू सिंह के पास ॥

बहुत से गांव फूंक दिये मेरे भारी बहुत किया नुकसान ।
हार के चिट्ठी तुम पर भेजी तुमने धीर बन्धाई आन ॥
तुम समझाय देओ मेवों को तुम्हरा भला करे भगवान ।
जनरल आजसे तुम अलवरके अपनी बहनको रखना शान॥
सुन सुन बातें रानी जी की चरनों में दिया शीश नवाय ।
आंसू भर आये आंखों में धीरज रहा बदन में नाय ॥
जोड कमेटी फौरन मित्रो बड़े बड़े मेव लिये बुलवाय ।
बुलाके बूढ़े हिन्दू शहर के सबकी खातिर करी बनाय ॥
यों समझाया है दोनों को क्यों तुम झगड़ा रहे बढ़ाय ।
यूं गुण्डे हैंगे ब्रिटिश के जो तुमको अब रहे बहकाय ॥
तुम मत आओ बहकाने में तुमको कौन पड़ी परवाय ।
जौन चीज की तुम्हें चाहना फौरन मुझे देओ बतलाय ॥
अगर नाजकी तुमको दिक्कत भर २ जहाज देऊं मंगवाय ।
जो कपड़े की तुम्हें जरूरत सबको परमिट दूं दिलवाय ॥
इतनी सुन बोले काले खां हमतो तुम्हारे तावेदार ।
क्या जिन्ना हमको देवेगा कौन कमी यहां हमें सरकार ॥
यासीन खां मेव का छोरा यह वकील जो बना हुशियार ।
उसने छोरे बका सब लीने बनना चाहे खुद मुख्तियार ॥
सीधे साधे हम देहाती उसने सबको लिया बहकाय ।
पेश हमारी एक न जाती हम सब को हारे समझाय ॥

किसकी जननी जना सूरमा जो तुमसे जाय आंख मिलाय ।
कौन चीज है मेव बिचारे अलवर ऊपर चढ़ कर आंय ॥
मैं हूं अंश उन्हीं वीरोंका जिन्होंने दिल्ली की विसमार ।
हम नहीं पीठ दिखावैं रन से काल बली से करें तलवार ॥
छत्री का ये धरम नहीं है रन से देवे पीठ दिखाय ।
बिदाकर दिया कासिद फौरन भली भांत दीना समझाय ॥
फिर ललकार दई ज्वानों को अब क्यों राखी देर लगाय ।
करो तैयारी झट अलवर की ऐसा वक्त मिले फिर नाय ॥
जिसको मोह जान का प्यारो घर से कदम न दीजो बार ।
जिसको प्यारी घर की नारी अपनी जाय बसो सुसरार ॥
जिसको प्यारा छत्री धरम है दुहरे बांध लेओ हथियार ।
जिसको प्यारा ब्रिजूसिंह है झट घोड़े पर हो असवार ॥
इतनी सुनकर सजे सूरमा पलकी देर लगाई नाय ।
जो साथी थे बृजूसिंह के सारे अलवर पहुंचे आय ॥
जहां कचहरी रानी जी की वहां जा सबने करी जुहार ।
देख के सूरत बृजूसिंह को रानी रोई जार बेजार ॥
रो रो रानी कहने लागी वीरा सुनले कान लगाय ।
जैसी विपता तेरी बहना पर किसी दुश्मन पर पड़ियो नाय ॥
रियाया मुस्लिम बिगड़ीं मेरी उन्हें गुण्डोंने दिया बहकाय
समझा समझा कर मैं हारी कहना एक सुने कोई नाय ॥

शांकर दुक गई है हिन्दुस्तान की सबने मूसले लिये बनाय।
जो कोई कदम धरे बाहर को त्रियें लेवें हाथ बनाय॥

भूल कदम मत बाहर दीजो ऐसे कहन लगीं समझाय।
रो रो कर के हिन्दुस्तानी बालक बच्चे रहीं छिपाय॥

याद राम को हिन्दू करते अपने घरों की शांकर मार।
वे फिकरी से भेस लूटते कर कर गोलीं की बोछार॥

छोड़के किस्सा यहांका पन्चो वृजूसिंह का लिखूं बयान।
उठती जवानी का जोश है दुश्मन के दे भुला औसान॥

ताकत नहीं किसी की पन्चो न दुश्मन सके आंख मिलाय।
सूरज बन्सी वीर बहादुर किसी को खातिर में नहीं लाय॥

नित जुवान उठ कसरत करता नित उठ बैठक दंड लगाय
मल्ल बहुत से उसके साथी इकला ही सबको जोर कराय॥

पहुंचा कासिद जब रानी का दन्ड पेलते थे सब जुवान।
कर आदाब दिया जब पर्चा छत्री की भई भवे कमान॥

लेकर परचा बांचन लागा भुजबन्ध तड़क २ रह जाय।
करनी सुनकर के भेरों की आंखों गईं लालरी छाय॥

पढ़ कर हालत रानी जी की नैनों से झर पड़े अंगार।
भर कर गरजा वीर बहादुर सूरज बन्सी राजकुमार॥

कासिद २ को ललकारा कासिद सुनले कान लगाय।
तूं जा कहना रानी जी से हमको कौन पड़ी परवाय॥

पहन के कपड़े फिरे ज्वानों ने चलने का कीना सामान ।
बांध बिस्तरे फौरन अपने करमें उठा लई कृपान ॥
किसने ने बांधे बरछी बल्लम किसी ने भाले लिये उठाय ।
किसी पे तोप तमन्चे पन्चो कोई शिवालगर रहा छुपाय ॥
कोई तो चढ़ बैठा घोड़े पर कोई ऊंट पर हुआ सवार ।
पगा बांध कर के मेवों ने सारे सगवा लिये हथियार ॥
एक मेवनी यूं उठ बोली जोहर सुनो लगाकर कान ।
जेवर लाना रानी जीका तब शोभे कन्ठ लगाना आन ॥
इतनी सुन के दूसरी बोली भइयां सुनो जरा दे ध्यान ।
एक मृगनैनी जाटनी लाना घर पर निका पढ़ाना आन ॥
अब दल चलपड़ा है मतवालोंका लशकरनहीं पड़े सुम्मार ।
लूटते आवे फूंकतेजावे जहां हिन्दूअ धनकी मिले चौपार ॥
रात दिना की मंजिल करके सब गुड़गामे पहुंचे जाय ।
नाते रिश्तेदार आ गये फौजी जुवान गये हैं आय ॥
भारी दल आया मेवों का कई कोस तक लगी कतार ।
सबने मिलकर हमला बोला गोविन्दगढ़ को दिया पजार ॥
काट काट बालक बच्चों को माल लूट लिया बेशुम्मार ।
इज्जत तार लई तिरयों की सुन सब भया कांप सन्सार ॥
बड़ा हौसला है मेवों का रात में देवें गांव पजार ।
डीमाना लूटा गुलबढ़ा लूटा नोगवां लूट किया बिस्मार ॥

छोड़ के किस्सा यहां का पन्नो अब मेवोंका लिखूं ब्यान ।
फूंक जलाना राजा जी का भागी खुशी हुए शैतान ॥
खोफ भूल गये सबएक दमसे फौरन चिट्ठी लिखी संभार ।
यासीन खां बने यहां का राजा तुझे गद्दी से देयें उतार ॥
हमसे बाद लगा कर राजा तेरी नहीं बसावे पार ।
अब हम जाते है अलवर से रहना खुब संभर हुशियार ॥
मेव चल पड़े हैं अलवर से बालक बच्चे रहे पहुंचाय ।
दूर दूर रिश्तेदारी में सारा धन दीना पहुंचाय ॥
बूढ़े बुढ़िये तक पहुंचादी खटिये पिढ़ये दी पहुंचाय ।
धीरज दे बालक बच्चे रिश्ते दार लिये बुलवाय ॥
करी पंचायत सबने मिलकर जुवान लड़ाके हो तैयार ।
छाओ छावनी गुड़गामे में या आशना सबकम खुमार ॥
ऐसा मारो इस काफिर को अपना भूल जाय घरबार ।
छोड़ रियासत खुद ही भागे सारे तजकर के हथियार ॥
जहां तहां हिन्दू धन को लूटो सबका करदो काम तमाम ।
जब तक जिन्दा हिन्दू बचा खाना पीना तुम्हें हराम ॥
हम तादादमें कुछ न कमती कुछ भु तनलमें बल कम नाय ।
अलवर कोपका चिट्ठी लिखकर फौजी जुवान लेवो बुलाय ॥
ये मन मानी जब सबही के फौरन चिट्ठी लिखी संभाल ।
सारा हाल अपना लिखकर के डाकमें चिट्ठी दीनी डाल ।

सन्ध्या करी आकर रानी से करना चाहियें कौन उपाय ।
जैसा संगठन है मेवों में ऐसा हिन्दुस्थान में है नाथ ॥
भारी तादाद यहां मेवोंकी फौजमें बहुत से मेव जवान ।
गोली बारूद सभीपर कब्जा नामालूम क्या होनुकसान ॥
कौन उपाय अब करना चहिये अकल काम कुछ देतीनाथ ।
हुक्म लौट दिया है मेवों ने बना जनाजा फुका जाय ॥
रियासत भरतपुर खाली करके यहां पर आगये बेशुम्मार ।
अकल काम न मेरी करती कैसे इनको दैऊं निकार ॥
इतनी सुनकर रानी गरजी राजा मत मारी करतार ।
हिम्मत हार दई एक दमसे लाज शरम सब धरी उतार ॥
मरद बना दिये जो ईश्वर ने भारी भूल करी करतार ।
चुड़ियां पहन लेओ हाथों में सर से पगड़ी धरी उतार ॥
बृजसिंह को लिखूं परवाना भरतपुर के जो सरदार ।
बिना उन्हों के यहांपर आये तुमसे दबें न ये बदकार ॥
सोच समझ यों रानी जी ने मन में सुमरे कृष्ण मुरार ।
श्री सिद्ध सरवोपम लिखकर गंगा जमना लिखी संभार ॥
राम २ लिखदी राजा को बृजसिंह को लिखी जुहार ।
सारा हाल लिखा अलवर का मेवों की लिखदी तकरार ॥
रोरी कर किया बन्द लिफाफा कासिद को दीना पकड़ाय ।
चल पड़ा कासिद है अलवरसे गौरी पुत मन्नेश मनाय ॥

चहरे फक हो गये मेवों के मन में करते सोच विचार ।
हमारे पुरखे बड़े अलवर में कहां अब जा हमकरें रुजगार ॥
यह बात देखी जब मेवों की तब गुन्डों ने कहा पुकार ।
ये नहीं मानेंगे राजी से काफिर कौम बड़ी बदकार ॥
जैसे पहले गद्दी छीनी वैसे ही अबके लेओ छिनाय ।
यासीन मियांको बनाबादशाह कौमको अपनीलेओरचाय ॥
ये राजा नहीं अपने लायक इसे गद्दी से देओ उतार ।
दिया इशारा यासीन मियांको वो बढ़करके आगया अगार॥
यह ललकार दई मेवों को तुम्हारी जनी को धिकार ।
लानत देगी दुनियां तुमको सारा हंसे जगत संसार ॥
ऐजन्ट मिला अलवर का हमसे साराजंगका दिया सामान
बहुत सामान भरतपुर से आया लाये फौजी शूरा जवान ॥
बाकी मंगाया हैदराबाद से तुमको कौन पड़ी परवाय ।
मेवस्तान यहां बनवादूँ जो तुम मेरी करो सहाय ॥
पहला काम ये करो सब मिलकर एक जनाजा करो तैयार ।
फरजी राजा बनाकेफौरन शमसान बीच चलदेओ पजार ॥
ये मन भाव गई सब हीके सब के दिल में गई समाय ।
भाई बन्द सब किये इकट्ठे नाते दार लिये बुलवाय ॥
बना जनाजा राजा जी का पन्चो फूंका जा शमसान ।
खबर सुनी जब ये राजा ने राजा होगया हाल समान ॥

एक हुक्म से हल्ला बोलो सारा काम फतै हो जाय ।
पिटते सदा से आवै हिन्दू चिन्ता फिकर सबदो बिसराय ॥

ये जूतों के यार सदा के इन्होंने कहां करी तलवार ।
चलती तेग सुन खुले हैं धोती घर की लेवें सांकर मार ॥

इस मौके पर जो कोई चूके वह नहींहै मुस्लिम का लाल ।
भोले भाले मेव पकड़ लिये ऐसी गुन्डे चलें वहां चाल ॥

हल्ला बोल दिया एक दमसे अपना मोरचा दिया लगाय ।
गुन्डे जुट गये चारों ओर के मार मार दई मचवाय ॥

बहुत सा समझाया राजा ने मत आपसमें करो तकरार ।
उल्टी धौंस दई राजा को ऊंच नीच का भूला विचार ॥

बच्चू सिंह राजा का भाई समझाने जब पहुंचा यार ।
एक सुनी नहीं किसी मुस्लिम ने फौरन गोली दीनी मार ॥

गोली लागी देख भाई के राजा हो गया काल समान ।
यहां से मेव निकलने चाहिये इसी बात में है कल्यान ॥

हुक्म सुना दिया है एक दम से जगह २ कर दिया ऐलान ।
जल्दी छोड़ो मेरी रियासत अपना बांध लेओ समान ॥

जो नहीं जाओगे राजी से सबको जबरन देऊं निकाल ।
पहले राड़ जगाई तुमने ऊंच नीच का खुला ख्याल ॥

हुक्म सुना जब ये राजा का बहुत से मेव गये घबराय ।
बहुत बुरा हमने ये कीन्हा खोटी लीनी राड़ जगाय ॥

ऐसी मार दई मेवों को अपनी भागे जान बचाय ।
लूटका सब सामान रह गया अपनाभी सँग आये गमाय ॥
मारे मारे फिरें दिल्ली में करते राजा को बदनाम ।
जो कोई उनसे हाल पूछता कहते ऐसा मेव तमाम ॥
राजा ने हमें काट दिया है छीन लिया सारा धन माल ।
नंगा करके हमें निकाला हमको कर दीना पामाल ॥
बेहद मेव पड़े दिल्ली में यहां पर खटका बहुत सिवाय ।
भर भर मोटर आवे जावे पन्चो पता चले है नाय ॥
बड़े २ मुसलिम मदद दे इन्हें इनके होसले रहे बढ़ाय ।
जो कुछ सुना लिख दिया पन्चों आगे कलम उठे है नाय ॥
भारी डर है गवरमेन्ट का फौरन पाबन्दी लग जाय ।
आगे जो कुछ होगा पन्चो उसको भी दूंगा छपवाय ॥
सुनी सुनाई मैंने लिखली झूँट सांच जाने भगवान ।
जो औरों का बुरा चाहेंगे उनको न बख्शे रहमान ॥

इति गुड़गांवे की आल्हा जंग अलवर

* समाप्त *

खुश ख़बरी

प्यारे मित्रो अगर आपको खतरे से डर लगता है अपने बाल बच्चों तथा धन जनकी हिफ़ाजतको गुण्डोंसे खतरा समझते हो तो उससे बचने के लिये आज ही ॥=) तेरह आने के डाक टिकट या तेरह आने का मनीआर्डर मय डाक खर्च भेज कर हमसे खतरे की घण्टी नाम की पुस्तक घर बैठे मंगवालें। ये पुस्तक आपको खतरे से बचाने में भाई से भी ज्यादा मदद करेगी। उर्दू-हिन्दी दोनों भाषा में पुस्तक तैयार है बहुत थोड़ी तादाद में बची है। १२८ पेज की पुस्तक का दाम इतना सस्ता लागत मात्र इसी वजह से रखा है कि हर गरीब अमीर मंगवा सके देर करने से आपको बाद में पछताना पड़ेगा।

मंगाने का पताः—

मेरठ पुस्तक भण्डार, नई सड़क देहली।

दूसरा पताः—

भगवत बुकडिपो, डिप्टीगंज बुलन्दशहर।

श्री भानु प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, धरमपुरा, देहली।